भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 27 अंक : 6 | 29.11.2004 सोमवार (नवंबर - दिसंबर) | प्रति अंक : 10.00

'ताड़देव की गतिविधियाँ'

हर साल की भांति इस साल भी अपने 'बड़े घर' दीवाली मनाने के निमित्त से मुंबई अमदावाद, वड़ोदरा, सुरत, पंजाब आदि जगह के मुक्त प.पू. गुरुजी के दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेने व नए साल के आशीर्वाद प्राप्त करने 'धनतेरस' के पवित्र दिन से दिल्ली अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर के प्रांगण में एकत्रित होने लगे...

इस साल की 'दीवाली' की शुरुआत धनतेरस के पवित्र दिन विशेष रूप से हुई। बहुत दिनों से प.पू. गुरुजी की इच्छा थी कि अब की बार 'धनतेरस' के दिन मंदिर में सामूहिक महापूजा रखें। सभी भक्त महापूजा में तीव्र पुकार करके प्रार्थना करें—जिससे भक्तों को विपरीत परिस्थियाँ, व्यवहार की परेशानियाँ, आध्यात्मिक उलझनों का हल मिले और नए साल में सब नई उमंग-उल्लास से आगे बढ़ें। बाहर से आने वाले भक्त भी इस महापूजा में सम्मिलित होने अपना प्रोग्राम इसी तरह बना कर दिल्ली मंदिर आ गए थे।

धनतेरस 10 नवंबर की शाम को प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में महापूजा की शुरुआत प.भ. ध्रुव ने करी। बहनों द्वारा खूब भक्तिभाव से बनाई लाल रंग की पाघ, लाल ज़री वाला कुर्ता पहन कर श्रीजी महाराज मानो दुल्हे राजा की तरह भक्तों को अनोखा ही दर्शन दे रहे थे। मंगल श्लोकों से—भजन से सारा हॉल गूंज उठा। महापूजा दौरान ही धून करने से पहले गुणातीत समाज के भक्तों के लिए धनतेरस का मर्म समझाते हुए प.पू. गुरुजी बीच में ही बोले कि—

*'देखो, आज धनतेरस की महापूजा हो रही है। आज घरों में धन का पूजन होता है। **हमारा सच्चा धन भगवान और संत हैं। महाराज—स्वामी और इनको अखंड रखे हुए भगवत्स्वरूप संत वो हमारा सच्चा धन हैं।** इससे भी अधिक—**उनके संबंध वाले ये जो भक्त हैं, उन्हें हम 'सोना' मानें।** सोना इझ ए इंटरनेशनल करन्सी।*

*ये बात समझ कर रखना। **कहीं भी—कोई भी प्रॉब्लम हो—और महाराज के साथ ऐसे मुक्तों को आगे रख देंगे, तो सारा माहौल महाराज बदल देंगे।** ये एक चाबी आज लेकर जाएं और... आज के दिन बराबर धून करें...'*

महापूजा की फलश्रुति रूप आशिष बरसाते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा कि—

*'आप सबको अभी महापूजा का प्रसाद दिया जाएगा... आज हमारे रवि ने बहुत अच्छी बात करी। सुबह में मैं उसे कह रहा था—महापूजा में आना और प्रसाद यहाँ लेना। जनरली दीवाली के दिनों में हर को अपने घर पर दीया जला करके पूजा वगैरह करने का मन होता है। पर, वह एकदम बोला कि हाँ बराबर आज 'बड़े घर' खाना खाएंगे। 'बड़े घर' का मतलब पता है ना ? मतलब एक फेमिली होता है, अलग-अलग रहते होंगे, लेकिन कहेंगे कि आज तो हम 'बड़े घर पर' एक साथ खाना खाएंगे। ये एक भावना अलग बनती है। गुजरात में दीवाली के दिन कोई घर बंद नहीं रखता कि अपने घर के आँगन में दीया जलना चाहिए। पर अपने साथ जुड़े मुबंई-अमदावाद-वड़ोदरा-सुरत के पच्चीस-तीस जने **'मोटे घेर दीवाळी करवा जईए छीए'** की भावना से वहाँ घर लॉक करके यहां आ गए... कई बार मैं कह चुका हूँ कि मंदिर जाना, मस्जिद जाना, गुरुद्वारे जाना वो अपने*

*भारत की संस्कृति है। लेकिन मोक्ष के लिए महाराज ने रास्ता बताया कि **सत्संग को अपना एक परिवार समझें।**'*

हम सभी जानते हैं कि पूरे गुणातीत समाज में प.पू. गुरुजी के कार्य एकदम निरालापन एवं दिल और दिमाग का समन्वय लिए होते हैं... अब की बार का दीवाली कार्ड जिस-जिसने देखा, उसे देखते ही विचार आया कि वाह ! क्या यूनीक आईडिया है? श्रीजी महाराज की पाघ में सारे गुणातीत स्वरूपों की परंपरा का दर्शन ! **प.भ. मल्कानी अंकल** तो बोल पड़े– **इट्स अ कोम्पोझीट पूजा इन इटसेल्फ !** उसी प्रकार 'धनतेरस' के दिन महापूजा में पूजन कराके **'सवा-सवा रूपये'** रखवाए। वैष्णों देवी पर जाते हैं, तो वहाँ बैठे पुजारी हर एक को बरकत का खज़ाना देते हैं.... वैसे अब की बार भक्तों के कठिन माहौल सुधारने की भावना से प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद रूप सवा-सवा रूपये का खज़ाना **प.पू. दीदी के वरद् हस्तों सभी भक्तों को दिलवाया।**

प.पू. गुरुजी के ये अनोखे जेस्चर से सभी भक्तों के दिल गद्गद् हो गए, आँखें नम हो गई और इससे भी अधिक अनेक भक्तों को पहला विचार तो यही आया कि आजकल 'चवन्नी' का काईन कहीं देखने को भी नहीं मिलता, तो प.पू. गुरुजी ने इतनी सारी नई चवन्नियों की व्यवस्था कहाँ से करी होगी ? स्वामी की बातों में लिखा है कि हम मानते हैं कि हमने भगवान व संत से प्रीति करी है; पर दरअसल तो भगवान व संत ने हमसे कई गुणा अधिक प्रीति करी है... प.पू. गुरुजी का यह जेस्चर उनकी हमारे प्रति की अद्भुत प्रीति का अजोड़ दर्शन कराता है।

प.पू. काकाजी महाराज ने उत्तर भारत में 'स्वामिनारायण' का संदेशा फैलाने अविरत परिश्रम करके जो आध्यात्मिक बीज बोए, वही **गुणातीत बगीचा प.पू. गुरुजी द्वारा सिंचित होकर पल्लवित दिखाई पड़ रहा है।** श्रीजी महाराज व मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी द्वारा प्रचलित सिद्धांतों को नींव में रख कर प.पू. काकाजी महाराज सत्संग के हर एक परिवार के सुख-दुःख में भागीदार बन कर– मिलजुल कर जीए.... इस उदात्त भावना की एक भव्य-नई शुरुआत जो हुई थी, आज इसी बेमिसाल परंपरा को प.पू. गुरुजी दिन-रात देखे बिना जीवंत रखे हुए हैं... 'उत्सव' तो निमित्त मात्र होते हैं। पर, प्रभु ऐसे मौकों पर हमें अनेक भक्तों के दिलों की भावना एवं निष्ठा का दर्शन करा देते हैं....

महाराज के समय की बात हमने पढ़ी थी-सुनी थी कि– '**महेमदाबाद** के पास एक छोटे से गाँव में **गलुजी राजपूत** रहते थे। वहाँ महाराज पधारने वाले थे। गलुजी को भी गाँव के बाहर ढोल-बाजे लेकर स्वागत समारोह में शामिल होना था। उसी समय संजोगवश गलुजी की माता का देहांत हो गया। गलुजी और उनके भाईयों ने तुरंत निर्णय किया कि माता के मृत शरीर को वस्त्र से ढक कर घर की परछत्ती पर फिलहाल रख दिया जाए और महाराज के स्वागत समारोह में ढोल-बाजा लेकर वे समय पर पहुँच गए।

महाराज का स्वागत सम्मान किया। महाराज ने संत मंडली के साथ ग्रामसेठ के यहाँ भोजन किया। महाराज वहाँ से वड़ताल को चले। दो मील तक गलुजी ढोल-बाजा बजाते-बजाते साथ-साथ गए। श्रीजी महाराज तो अंतर्यामी स्वरूप थे, वहाँ उन्होंने भगत गलुजी से कहा– 'अब शीघ्र घर जाकर अपना अधूरा काम निपटाओ; सुबह से भूखे-प्यासे हो, न मालूम कब अन्न-जल पाओगे।' गलुजी महाराज को प्रणाम करके लौट गए।

सद्. मुक्तानंदस्वामी को महाराज के शब्दों में कुछ रहस्य दिखाई दिया। सद्. मुक्तानंदस्वामी ने महाराज को पूछा कि– महाराज, गलुजी तो सुबह से हमारे साथ ही हैं, तो उनका कौन-सा अधूरा काम रह गया ? श्रीजी महाराज हँस पड़े और धीरे से गलुजी की माताजी के देहांत की और विधि पूरी करने की बात करी... सद्. मुक्तानंदस्वामी तो सारी बात सुन कर अवाक् रह गए व कहने लगे कि– धन्य-धन्य ऐसे भक्तों की अनुपम भक्ति को !'

यह बात सवा दो सौ साल पहले की है। परंतु सत्संग में आज भी ऐसे भक्त हैं, जिनकी भक्ति देख कर दिल नतमस्तक हुए बिना नहीं रहता।

लुधियाना-पंजाब से **प.भ. दर्शनसिंह भट्टी** नाम के एक हरिभक्त दिल्ली मंदिर आते हैं। 'अन्नकूट' का निमंत्रण कार्ड मिलने पर उत्सव में दिल्ली आने के लिए वे अपना रिज़र्वेशन कराने दो दिन पहले ही लुधियाना स्टेशन गए। अभी टिकट ले ही रहे थे कि मोबाईल पर उनके घर से फोन आया कि उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया है। प.भ. दर्शनसिंहजी ने समाचार सुनने के बावजूद ज़रा भी विचलित हुए बिना महाराज को ही सर्व कर्ता-हर्ता व सर्वोपरि मान कर शांत मन से टिकट बुक कराई और घर गए ! उनकी जगह और कोई होता तो टिकट रिज़र्व कराए बिना

ही वापिस घर की ओर दौड़ता। पिताजी की अंतिम विधि निपटा कर 'अन्नकूट उत्सव' की सुबह वे दिल्ली मंदिर प.पू. गुरुजी के पास पहुँच भी गए !! **कोटि-कोटि वंदन हो ऐसे भक्तों के प्राणरूप प्रभुधारक सच्चे संत को और अपने जीवन में जगत-समाज के खोखले रीति रिवाजों को बाजू में रख कर भगवान व संत को प्राथमिकता देकर जीने वाले निष्ठावान भक्तों को।** प.पू. काकाजी महाराज अनेक बार अपनी परावाणी में कहते कि हजार भेड़ों को इकट्ठा करने की बजाय एक 'सिंह' तैयार हो तो वो अधिक है। सच ! ऐसे निष्ठावान भक्त ही सत्संग की शान-एसेट्स हैं !

13 नवंबर, शनिवार की सुबह 'ताड़देव' मंदिर का नज़ारा सड़क से गुजरने वाले हर एक को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर रहा था। मंदिर का प्रवेश द्वार फूलों की लड़ियों से सुसज्जित होकर मानो 'अन्नकूट' का दिव्य प्रसाद लेने सब को आमंत्रित कर रहा हो। संत-बहनें-युवक एवं हरिभक्त– भाई-भाभियाँ दीवाली के पूरे दिन फूलों को पिरोने की व अन्नकूट प्रसाद के लिए सब्जियाँ काटने की सेवा में मग्न रहे... इन सब ने तो इस सेवा में ही अपनी दीवाली जो मानी थी। रात को वापिस घर जाकर पूरी रात अन्नकूट के लिए व्यंजन तैयार करे और सुबह तो तैयार होकर मंदिर पहुँच गए। अन्नकूट की आरती से पहले प.पू. गुरुजी की सेरेछाया में हर साल की तरह सत्संग की एक छोटी सभा का आयोजन किया था। दीवाली के कार्ड की बड़ी डिज़ीटल प्रिंट को ही अन्नकूट के दिन प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे पर्दे के रूप में लगाया था। मूर्ति की दोनों ओर हमारे सभी गुणातीत केन्द्रों के चिन्ह एवं दीपक, स्वस्तिक व ओम् के शुभ चिन्ह् भी रखे हुए थे। सुरत के प.भ. किशोरभाई देसाई और मुंबई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने अपने उद्गार कहे। नए साल की शुरुआत में ही दिल्ली गुणातीत समाज की भावना व्यक्त करते हुए **प.भ. मल्कानी साहेब** ने प.पू. गुरुजी को फूलों का हार अर्पण किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने **दीवाली कार्ड के संदेश** को समझाते हुए आशिष प्रदान करे।

सभा के बाद प.पू. गुरुजी व सभी संत और हरिभक्त अन्नकूट आरती करने मंदिर के हॉल में गए। आज श्रीजी महाराज ने फिरोज़ी रंग की पाघ व दुपट्टा धारण किया था। इस विशेष दिन पर मानो श्रीजी महाराज भक्तों की भावना के आधीन होकर पूरे साल की स्मृति देने कुछ अलग-अनोखा दर्शन देने स्वयं लालायित होते हैं। वह अद्भुत दर्शन सभी को सहज ही खूब मोहित कर रहा था। कई तो बोल भी पड़े कि आज महाराज की लुभावनी मूर्ति की ओर से नज़र हटाने का मन ही नहीं कर रहा। सबसे पहले प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोद, प.भ. हृदय वर्मा ने थाल गाकर भावपूर्ण 'अन्नकूट भोग' लगाया। थाल के बाद अन्नकूट आरती हुई। उसी दौरान मंदिर के पीछे वाले लॉन में स्क्रीन पर बहनों-भाभियों ने आरती का दर्शन किया। आरती के बाद प.पू. गुरुजी व सभी हरिभक्त कढ़ी, चावल, मिक्स सब्जी का प्रसाद लेने आए और बहनें व भाभियाँ अन्नकूट का दर्शन करने हॉल में गईं।

हर साल की तरह चार-साढ़े चार बजे के करीब ठहरे हुए सभी हरिभक्तों में महाभोग का प्रसाद वितरित किया गया। और.... बहनें अन्नकूट के बर्तन साफ करके एवं सभी भाई गरबा व भांगड़ा करके ठाकुरजी को लगाए गए पान का प्रसाद लेकर नौ बजे अपने-अपने घर रवाना हुए !!!

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद....

.....अभी ये जो कार्तिक महीने के मैगेझीन्स आएंगे–दीवाली के इश्यूझ जो होते हैं, उसमें यह आर्टीकल होता ही है कि **आपका अगला साल कैसा जाएगा ?** और.... 'ज़रा देखें–कैसा है ?'–करके हर एक उसमें नज़र डाल ही देता है। कई तो सामने से एस्ट्रोलोजर के पास जाते हैं कि ज़रा हमारी कुंडली निकाल कर देखो– ज़रा जन्मपत्री देख लो। पर, जो प्रभु का दृढ़ आश्रित होगा, वो उस तरफ क्यूरीयोसिटी से भी नज़र डालेगा ही नहीं। आप पूछोगे कि क्यों नहीं डालेगा ? मैं समझाता हूँ।

.....रामकृष्ण मिशन की शारदा माँ ने लिखा हुआ है कि–इन्जेक्शन्स ऑफ डेस्टिनी आर केन्सल्ड, इफ वन टेक्स रेफ्यूज़ इन गॉड। फिर आगे लिखा है–डेस्टिनी वीथ हर ओन हेन्ड्स स्ट्राईक्स ऑफ वॉटएवर शी हैज़ रिटन फॉर सच ए डिवोटी। इसी बात को काकाजी-पप्पाजी यूं समझाते हैं कि भगवान और संत की इच्छा–प्रगट की इच्छा ही अपना 'प्रारब्ध' बनता है। उसके चैतन्य के विकास के लिए उसी के प्रारब्ध को बदलना–टाल देना वो सब वे करते रहते हैं।

तो फिर आप पूछोगे कि क्या ये एस्ट्रोलोजी–ये एस्ट्रोनॉमी गलत है ? गलत नहीं है, वो सही है। लेकिन उससे भी ऊपर एक सत्ता है, प्रभु सत्ता - ब्राह्मीशक्ति जो इसको बदल सकती है ! तुम्हें क्या होने वाला है, वो एस्ट्रोलॉजी पढ़ देगी-लेकिन वो बदल नहीं पाएगी। एस्ट्रोलॉजर इसको बदल नहीं पाएगा। पर हमने ऐसी कोई गड़बड़–ऐसा कोई प्रारब्ध खड़ा कर दिया हो, कोई ऐसा कर्म कर भी दिया हो, लेकिन भगवान या भगवान अखंड रखे संत की सेरेछाया में हम चले जाएंगे और उसके पास दिल की सच्चाई से–ढोंगीपने से नहीं, दिल की सच्चाई से अपनी गलती कहो-किया हुआ कहो, कबूल करके फिर दोबारा नहीं करने की पक्की गाँठ बांध लेते हैं, तो ऐसे सच्चे संत हमारे प्रारब्ध को बदल भी देते हैं।

महाराज के समय में हमारे बहुत बड़े संत हो गए-**सद्गुरु गोपाळानंदस्वामी** ! इन्होंने अष्टांग योग सिद्ध करा हुआ था। दो विभूतियों ने अष्टांग योग सिद्ध करा हुआ है। एक भगवान श्री कृष्ण ने और दूसरे ये सद्गुरु गोपाळानंदस्वामी ने ! वे बहुत समर्थ थे। उनका एक सेवक बड़ौदा में रहता था। पंडित था और गायकवाड़ सरकार के पास राजदरबार में आता-जाता रहता था। वहाँ कुछ बात चली कि ये ग्रहण आ रहा है- ये है-वो है। उसने एकदम कह दिया कि यह ग्रहण नहीं होने वाला। दूसरे जो पंडित थे उन्होंने कहा कि ये तो दिखने वाला है। वह अपनी जिद्द पर अड़ गया कि 'नहीं होगा'। बहस बढ़ गई। उसने शर्त लगा दी कि अगर ग्रहण दिखाई पड़े, तो मैं मेरा सिर काट कर राजदरबार में रख दूँगा। फिर वह घर गया–करा। उसका दिमाग थोड़ा शांत हुआ। सारा केल्क्यूलेशन फिर से करा, तो ख्याल पड़ा कि ये तो दिखने वाला है। वो तो डूब गया। उसे यूं डूबा हुआ देख कर लड़की ने पूछा कि क्या हुआ ? खूब पूछने पर उसने बताया कि ऐसी-ऐसी बात है और मैंने यह शर्त लगा दी है। तो लड़की बोली कि इसमें कौन-सी बड़ी बात है, कल जाकर राज दरबार में कह दो कि दिखने वाला है, केल्क्यूलेशन्स में गलती थी। वो कहने लगा-नहीं, अब एक बार मैंने शर्त लगा ली, तो मैं झुक कर कैसे जाऊँ ? पंडित था–पंडित लोग बहुत जिद्दी होते हैं। लड़की ने खूब कहा, लेकिन वह बोला– यह तो नहीं हो सकता। सिर कटवा दूँगा, पर अब मैं झुकूँगा नहीं। लड़की को पता था कि ये गोपाळानंदस्वामिजी के पास आते-जाते रहते हैं। सो, लड़की ने कहा कि– फिर आप स्वामी को बात करो, वो कोई हल निकाल देंगे। वो गोपाळानंदस्वामी से मिलने गया। तो गोपाळानंदस्वामी ने पहले तो यही कहा कि इसमें कौन-सी बड़ी बात है ? तू जाकर कह दे कि गलती खा गया था, ये तो दिखने वाला है। तो उसने कहा कि स्वामी ! ये तो नहीं होगा। आप कुछ करो, आप समर्थ हो-कुछ करो। स्वामी ने उसे खूब समझाया। पर वह माना नहीं और बोला कि– मैं सिर कटवा दूँगा, लेकिन जाकर ऐसा तो नहीं कहूँगा। गोपाळानंदस्वामी ने कहा कि फिर एक रास्ता है। ग्रहण तो होने वाला है। सब जगह दिखेगा, पर बड़ौदा में नहीं दिखेगा ! लेकिन एक बात है कि आगे से कभी ऐसी शर्त लगाना नहीं। उसने कहा–वो बात पक्की और वाकई ऐसा हुआ कि वडोदरा डिस्ट्रीक्ट में वो ग्रहण नहीं दिखाई दिया ! देखो, ये ज्योतिष नहीं कर पाएगा। ये सच्चा संत कर पाएगा; क्योंकि प्रभु की शक्ति उसके आधीन रहती है।

ऐसे काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी... अभी भी मौजूद हैं। ये मल्कानी साहेब जाते हैं ना पप्पाजी के पास ? वहां लक्ष्मण बापा करके हैं। ये बात मैंने पहले भी करी है। उसको योगीजी महाराज ने सालों पहले एक आज्ञा करी थी। माणावदर का मंडल आऊटराईट काकाजी का, जिस पर जोगी महाराज की हकूमत चले। **जो ऐसे भक्तों के आऊटराईट रहें, वे ही प्रभु के निजी बनते हैं।** कई ऐसे हैं कि संतों के ईर्दगिर्द चक्कर काटते रहते हैं-इसे गुजराती में कहते हैं–'व्हालेश्री थवा माटे'। पर जो भक्तों के चक्कर काटते रहते हैं, वो अपने आप संत के डियर एण्ड नियर-निजी बनते हैं ! महाराज ने इसका एक जेस्चर भी करा था। महाराज चारपाई पर बैठे थे और थोड़ी दूर पर्वतभाई बैठे थे। महाराज ने एकदम कहा कि ये चारपाई के जो चाकर हों, वो यहाँ बैठे और जो ये सत्संगी पर्वतभाई के चाकर हों वो वहाँ जाकर बैठे। तो मेजॉरिटी महाराज के पास बैठे रहे, एक-दो जने उठ कर पर्वतभाई के पास जाकर बैठे। यूं सब बैठ गए, तो महाराज उठ कर पर्वतभाई के पास जाकर बैठ गए ! बोले कि– **मैं तो सत्संगी का सत्संगी हूँ** ! यूं लक्ष्मण बापा पर जोगी महाराज की हुकूमत चलती थी, क्योंकि वो काकाजी से खूब जुड़ा हुआ था। **माणावदर यानि– दादुभाई का** ! उसको बापा ने नियम दिया कि– तुम रोज शाम की आरती में अचूक मंदिर जाना। कई चीजें ऐसी होती हैं कि जब तक नॉर्मल संजोग होते हैं, तब तक हम उसका पालन करते हैं। थोड़े अपने प्रोग्राम डिस्टर्ब हो जाते हों–अपनी वृत्तियाँ कहीं खींच जाती हों, वहाँ संत की आज्ञा से हमारी नज़र हट जाती है। पोलिटिक्स में उसे खूब इन्टरेस्ट था। तो एक बार वो आरती के लिए घर से निकला ही और

रास्ते में कुछ भीड़-भाड़ देखी, सो वह देखने वो वहां खड़ा हो गया। फिर देखा कि ये तो दो राजकीय पक्षों की झंझट चल रही है और थोड़े लोग उसके अपने पक्ष के भी हैं। बेमतलब वो बीच में शामिल हो गया। वो भूल गया कि मुझे मंदिर जाना है। देखो, साधु ने नियम दिया होता है—प्रारब्ध को टालने के लिए ! कई कहते हैं कि 'होनी' को कोई टाल नहीं सकता। अरे ! 'होनी' टालने के लिए तो योगीजी महाराज ने ये नियम दिया था। लेकिन **उसने अपने मन को ज़्यादा गिना, अपनी वृत्ति के एन्टरटेन्मेन्ट को ज़्यादा समझा और साधु के नियम से निगाह हट गई।** वो उसमें पूरा इन्वॉल्व हो गया और उसी ने वहाँ स्टेबिंग भी कर दी। सब के साथ वह पकड़ा गया और केस चला। लेकिन था वो 'भगत' ! सो दूसरे सब तो वकील वगैरह की झंझट में पड़ते थे, ये तो सो जाए और रात को उठ-उठ कर भजन करे। उसने मन्नत भी मान ली कि अगर मैं छूट गया, तो सीधा योगीजी महाराज के पास जाऊँगा और फिर सारी जिंदगी उनके हवाले कर दूँगा। स्टेबिंग उसने करा था, पर वो आख़िर में निर्दोष छूटा और बाकी सब को बीस-बीस साल की सजा हुई। वो नेक था। जैसे ही छूटा, वो गया योगीजी महाराज के पास। उन दिनों ये 'ज्योत' की शुरुआत हुई थी। बापा ने कह दिया कि दादुभाई और बाबुभाई ने बहनों का आश्रम बनाया है, वहाँ सेवा में चले जाओ। आज तक वो वहाँ हैं।

...तो ऐसे संतों की हमें प्राप्ति हुई है। छोटे से नियम से वे अपने प्रारब्ध को टालने कैसे लगे रहते हैं ? मानो हमारा कोई प्रोग्राम हो और स्वामिजी एकदम यहाँ आने का प्रोग्राम बना दें—पप्पाजी एकदम प्रोग्राम बना दें, तब हमें हो कि हमारे यहाँ ये दीवाली और कहाँ ये स्वामिजी आ गए ! अभी ये पप्पाजी का प्रोग्राम ? अगर हम मानते हैं कि ये प्रभु का स्वरूप हैं, तो हमें भीतर में क्यों डिस्टर्बन्स हो या क्यों हम अनकम्फर्टेबल हो जाएं ? अगर डिस्टर्ब हो गए, तो हमारे बोलने और मानने में फर्क है। प्रभु को अंतर्यामी-सर्वज्ञ मानते हैं, तो क्या वो नहीं जानते कि कितना काम है यहाँ ? पर ये अपनी जीवदशा होती है।

ये कार्ड का कहने का इतना ही है कि ऐसा भव्य संबंध हुआ है, तो जैसा अर्जुन ने श्री कृष्ण का आसरा रखा, ऐसा आसरा हम भगवान एवं संत का रखें। मैंने धनतेरस पर जो कहा था कि **भगवान और संत को अपना सच्चा धन माना जाए** एवं **ऐसे मुक्तों को 'सोना' समझ लें— बस अपनी दीवाली और धनतेरस हो गई।**

धनतेरस के दिन हम शगुन में 'सोना' खरीदते हैं। वैसे भक्तों को हमारे रास्ते में आते रोड़े न समझ कर 'सोना' समझते हुए इनके साथ का संबंध बढ़ाते जाएंगे, तो दिया लेकर भी दुःख ढूँढने जाएंगे, हमें वो कहीं नहीं मिलेगा। वर्ना तो— सूरज के प्रकाश में भी बैठे होंगे, लेकिन यह बात नहीं होगी, तो हम मुँह लटकाए बैठे रहेंगे।

यहाँ **'मेरे भगवान'** यानि— मुझे मिले वो भगवान - मेरे दादा ने देखे वो नहीं। ये समझने की बात है-प्रगट की बात है। सारी सत्ताएँ हैं, लेकिन सबसे परे प्रभु की सत्ता है और वो हमारा कभी अहित होने ही नहीं देगा। भगवान के यहाँ जस्टिस की बात नहीं है, भगवान के यहाँ हमेशा माफी ही है। जस्टिस में तो जो गलत है, उसको सजा मिले-वो न्याय। अग्रेंजी में क्या कहावत है ? ह्यूमन इझ टु एर, एण्ड डिवाईन इझ टु पनिश ? नहीं, 'डिवाईन इझ टु फॉरगिव'। भले हम कितने ही गलत हों, पर वे हमारे दुश्मन बन ही नहीं सकते। ये माँ-बेटे के रिश्ते जैसा है। माँ कभी बेटे की दुश्मन बन सकती है क्या ? कभी नहीं बन सकती-बेटा कितना ही कुछ करा करे। हाँ, बच्चा तूफान-शरारत करता होगा तो गुस्से में कहेगी— 'मर तू'। लेकिन उसे बुखार भी आ जाए, तो मन्नत करने लग जाएगी और... काकाजी ने तो इससे भी बढ़ कर बताया— **'जॉयस फॉरगिवनेस'** ! वे कभी गिनते ही नहीं हैं कि भले अभी सुधर गए हो, पर पहले ऐसा करते थे। हाँ, माफी मांगने की हमारी भावना दिल की सच्चाई से होनी चाहिए।

कोई ग्रह, कोई पनौती, कोई मैली विद्या हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती। ये प्रभु किसी का कुछ चलने नहीं देंगे और हमारे हित में ही करेंगे। लेकिन वो तुम्हारे प्रभु मानवस्वरूप में तुम्हें मौजूद मिले होने चाहिए। जैसे अर्जुन का सारथी कृष्ण था—इसलिए मैंने कहा, मेरे दादा को मिले वो नहीं। मानवस्वरूप में वो मौजूद होना चाहिए। भगवान स्वामिनारायण ने वो अनपॅरेलल बून दिया कि जब तक धरती पर मानव जीवन रहेगा, वे स्वयं या ऐसे संतों द्वारा मानवस्वरूप में मौजूद रहेंगे। उनके साथ जो संबंध— वही अपना सच्चा धन ! राम-राम, कृष्ण-कृष्ण, माता-माता, महादेव-महादेव, स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भी कितना ही करा करें, लेकिन वो स्वामिनारायण, वो राम, वो कृष्ण, वो माता, वो महादेव, वो संतोषी माँ,

वो वैष्णो देवी मानवस्वरूप में बोलते-चालते तुम्हारे साथ धरती पर होने चाहिए। तब यह टेक्नोलॉजी इन्स्टन्ट काम करती है। कॉम्पयूटर की टेक्नोलॉजी कैसी इन्स्टन्ट है ? वैसी ये टेक्नोलॉजी भी इमीजिएट-इन्स्टन्ट वर्किंग !

....दूसरा– '**सर्वथा**' का मतलब– हर प्रकार से–तन से, मन से, धन से, आत्मा से– चारों प्रकार से।

....यहाँ '**मैत्री**' रहस्य है, लेकिन हम वो पकड़ते नहीं हैं और फिर ऊपर से कहते हैं कि कुछ नहीं होता। हमें 'मैत्री' है, अपने मन के साथ, भक्तों के साथ नहीं। भक्तों के साथ 'मित्रता' है, जो मेन्टल है। इसलिए जब तक अपने मन को ठीक लगता है, तब तक वो दोस्ती चलती रहती है। मन के मुताबिक मुक्त नहीं चलेंगे, तो हम उनसे दुश्मनी तो नहीं करेंगे, लेकिन मित्रता नहीं रह सकती। मैत्री में कुछ भी हो, वह टूटती ही नहीं ! **'मित्रता' मेन्टल है, 'मैत्री' चैतन्यस्वरूपी है।** पर, वो पकड़े रखना पड़ता है। उनके भक्तों में–उनके संबंध वालों में 'मैत्रीभाव'; यानि– उनसे हम अलग हो ही नहीं पाएं। ये रखें तो रोज सुनहरा दिन !

...धनतेरस के दिन मैंने बात करी थी कि यहाँ जो सब आए हैं–पंजाब से भी आए हैं, गुजरात से आए हैं, मुंबई से भी आए हैं; वे दीवाली के दिन घर छोड़ कर बाहर निकलना ठीक नहीं समझते। वे मानते हैं कि अपने घर में दीवाली के दीए जलने चाहिए। लेकिन हमारे रवि ने बहुत अच्छी नसीहत दी कि हम यूं क्यों ना समझें कि हम दीवाली मनाने अपने बड़े घर जा रहे हैं। गुजरात में तो कहते हैं– 'मोटे घेर दीवाळी करवा जईए छीए।' बस, यूं हमें समझना है कि हम अपने बड़े घर जा रहे हैं...

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीर्वचन)

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

* साधु वही जो जीव को प्रभु से जोड़े। साधु वही जो प्रभु का बल लेना सिखाए। प.पू. काकाजी ने हम सब को वो ट्रेनिंग दी।
* प.पू. काकाजी महाराज बोले कि हमारे प्रभु का नाम भी कैसा ? 'सहजानंद' ! वे तुम्हारे हृदय में भी हैं। 'अर्थं साधयामि व देह पातयामि' जैसी हिम्मत करके उसको प्रगट करना है।
* मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की बात प्रकरण ६ की १८५ में तीन बार '**हिम्मत**' शब्द इस्तेमाल किया है। तो, भगवान भजने का मार्ग हिम्मत वालों का है। अर्थात्– शूरवीरों का है। हमने गाया तो बहुत कि– 'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जोने...' लेकिन हम यह मानते नहीं हैं। हम क्या मानते हैं कि जो लाचार हैं, मजबूर हैं, जिनका कोई आधार नहीं है, निराधार हैं–वे सब भगवान भजते हैं।

  प.पू. साहेब ने 28 मार्च के फक्शन में बात करी थी कि कंधे पर थैला लटकता हो, दर-दर भटकता हो- गुजरात में उसे बोला जाता है कि 'भगत' फरे छे। यानि– भक्त घूम रहा है।

  'भक्त' की व्याख्या असल में यह नहीं है। 'भक्त' तो अर्जुन... जिसने मानवस्वरूप में प्रगट प्रभु को पहचाना। संत के पास सरंडर हो जाए वो 'भक्त' !

  भीष्म को 'भक्त' नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वो अपने इज़्म से चिपका रहा। युधिष्ठर को भी 'भक्त' नहीं कहा जा सकता। हाँ, उसे धर्मवान बोल सकते हैं, लेकिन 'भक्त' अलग चीज है।

  'भक्त' को तो अपना कुछ होता ही नहीं। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने गीताजी में कहा कि– सब धर्मों को छोड़ कर–यानि तेरे मन के माने हुए इज़्म को भी छोड़ कर मैं जो कहूँ वो कर।
* हमारी बुद्धि पौना सेर और प्रभु की सवा सेर माननी चाहिए। हम तो उल्टा मानते हैं कि प्रभु की पौना सेर और हमारी सवा सेर ! **तभी तो कहते हैं कि प्रभु इतना ठीक करते हैं, इतना ठीक नहीं करते हैं।**
* प.पू. काकाजी ने कभी '**अंधविश्वास**' की बात नहीं करी। उन्होंने हमेशा '**अटल विश्वास**' की बात करी है। सो, वे कहते कि पहले गुरु को नाईट्रिक एसिड में डाल कर टेस्ट कर लो; लेकिन उसके बाद फिर कोई संदेह नहीं करना।
* हम एक मटका भी खरीदते हैं, तो टकोरा मार कर देखते हैं। पर **फिर बार-बार तो टकोरा मारते नहीं रहते ना ?**
* हम संत लोग सभी को उपदेश करते हैं कि आप सब मिलजुल कर रहो, पर आजकल धार्मिक स्थानों में आपस में ही इतने मतभेद होते जा रहे हैं कि कोई ना कोई तो किसी दिन हमें भी कह देगा कि पहले आप सब तो मिलजुल कर रहो ! आप लोग ही तो एक-

दूसरे के उत्सवों तक में बुलाने-जाने से भी कतराते हो !!

❋ कई कहते हैं कि भई गुरु लोग तो समझाते हैं, पर **सेवक नहीं मानते। यह बात एकदम गलत है।** प.पू. काकाजी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि– 'वांकुं अमारा सद्गुरुओनुं ज छे।'

देखो ! इन्होंने किसी की मोहब्बत नहीं रखी। अपने आपको भी उसमें सम्मिलित किया कि टेढ़ा हमारा सद्गुरुओं का ही है।

वे कहते थे कि अगर हम ठीक से रहेंगे-हम इन बेसिक और रेडिकल प्रींसीपल्स को नहीं छोड़ेंगे, तो फॉलोअर्स (शिष्य) भी कभी न कभी समझ कर सही दिशा पर आ ही जाएंगे।

❋ भगवान स्वामिनारायण धरती पर अवतरित होकर जो कराना चाहते थे, उसके लिए उन्होंने कई चरित्र (जेस्चर्स) करके भी बताया। सद्. मुक्तानंदस्वामी एक बार गाँवों से विचरण करके लौटे तो श्रीजी महाराज ने उन्हें पूछा कि– मुक्तानंदस्वामी ! तुम इतना गाँव-गाँव घूम कर आए हो, तो बताओ– कितना सत्संग बढ़ा ?

सद्. मुक्तानंदस्वामी ने जवाब दिया कि महाराज ! सत्संग तो बहुत बढ़ा, काफी कंठियाँ चली गई–यानि बहुतों ने 'वर्तमान' लिया वगैरह....

तो श्रीजी महाराज एकदम बोले कि– चलो फिर हमें बताओ कि हम कहाँ से आए हैं ? सद्. मुक्तानंदस्वामी बोले कि महाराज यह तो नहीं पता।

महाराज दरअसल इशारा देना चाहते थे कि मैं इस तरह का **भेड़ टाईप-बस भीड़ इकट्ठी करना-ऐसा सत्संग बढ़ाना नहीं चाहता।**

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने श्रीजी महाराज की इस बात का स्पष्टीकरण करते हुए बात करी कि **'भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि' वही सत्संग है।**

रोज मंदिर जाना, टीका-टपका करना, प्रदक्षिणा करना-यह नहीं करना है, ऐसी बात नहीं। पर, उसे 'सत्संग' नहीं कहा जाए–भक्ति कही जाए।

❋ श्रीजी महाराज जिस प्रकार के सत्संग का कॉन्सेप्ट लेकर-योजना लेकर धरती पर आए, वह हम भूल गए और बड़े-बड़े जलूस निकालने, ग्रेनाईट के-मार्बल के-सोने के मंदिर बनाने में लग पड़े। इससे भी अधिक हमने हमारे ढंग का सत्संग बढ़ाने अनहेल्धी मीन्स भी चालू कर दिए। डायरेक्ट्ली-इनडायरेक्ट्ली अपना ही बड़प्पन बढ़ाने–अपनी ओर खींचने स्ट्रेटेजी और टेक्टिक्स हम संत लोग-सद्गुरु लोग तो कम से कम ना खेला करें।

❋ प.पू. काकाजी ऐसे 'सत्संग' की चाहना रखते थे। यहाँ तो उन्होंने आशीर्वाद रूप कहा भी है कि– **आपणुं दिल्लीनुं सेन्टर आखा संप्रदायमां अनोखुं थवानुं छे... त्यांनो समाज तमने एमां खूब साथ आपशे।**

वो क्या साथ ? कि हमें बात को समझना चाहिए कि सत्संग बढ़ाने की प्लानींग करने की बजाय पहले हम खुद सत्संग करें। सत्संग के प्रचार और प्रसार करने की इन्टेन्शन रखने की बजाय हम खुद पहले निष्ठा पक्की करें। बाकी सारा काम प्रभु करते रहेंगे। उससे प्रचार-प्रसार भी अपने आप होता रहेगा।

❋ कल्याण तो जिसका जिसके द्वारा होना है, वह होगा ही। तो प्रभु के कार्य में हम क्यों बीच में इन्टरवेन करें ? इसका उदाहरण 'स्वामी की बात' में बताया कि परीक्षित के समय में व्यासजी इत्यादि तो खूब बड़े थे, लेकिन परिक्षित का कल्याण भगवान कृष्ण ने शुकदेवजी द्वारा कराया। शुकदेवजी तो व्यासजी से छोटे थे। तो हमारे ऐसे मेज़रमेन्ट्स कोई मायने नहीं रखते।

❋ हमारा तो एक ही इन्टेन्शन होना चाहिए कि 'कुटुंबभाव' से सत्संग का विकास करें। जहाँ कुटुंब भावना होगी, वहाँ अपनापन अपने आप सहज होगा।

मैं बार-बार कहता हूँ कि ये काशीरामभाई राणा साहेब मुझे पसंद आए, वो इसलिए कि एक कुटुंब के प्रति जैसी भावना-अपनापन होता है, वैसा काशीरामभाई ने हमारे साथ रखा। मिनिस्टर ऑफ स्टेट भंडारू साहेब से हमें मिलने जाना था। राणा साहेब के परिचय से ही हमें एपोईन्टमेन्ट मिली थी। पर, खुद केबिनेट मिनिस्टर होते हुए भी राणा साहेब हमारे साथ एक सेवक की अदा से वहाँ आए। यह है सच्चा सत्संग...

❋ अपने यहाँ कभी भी कोई प्रॉब्लम आती है, तो हर एक को होता है कि सब कुछ छोड़ कर बस धून ही शुरु कर दो। अब तो प्रत्येक को पर्सनली प्रतीति भी हो गई है कि धून ही करो, अपना काम हो ही जाएगा।

तो, ऐसा सत्संग बढ़ाना है और उसे कहा जाए– काकाजी का अनोखा सेन्टर ! इस मुकाम से, इस डेस्टीनेशन से-इस दिशा से हमें बदलना नहीं है। वो हम सच्चे काकाजी के सच्चे संत के कहे जाएं।

अलविदा, 2004..... सुस्वागतम्, 2005

बहुत बार हमें विचार आता ही होगा कि पत्रिका, निमंत्रण कार्ड्स, सभाओं में बातें तो घुमा-फिरा कर ज़्यादातर एक जैसी ही होती हैं। यानि– सुहृद्भाव, निर्दोषबुद्धि, दिव्यभाव, भक्तों की झंझट में ना पड़ना, संबंध वालों में आत्मबुद्धि-प्रीति...। पर, इसका दूसरा पहलू सोचें-भीतर में अंतर्दृष्टि करें कि गुणातीत स्वरूपों की इन बातों को लेकर अब तक हम कितना चले ? टीचर की लाख कोशिशों के बाद अगर कोई बच्चा अपनी लापरवाही से एक ही क्लास में बार-बार फेल होता रहे और ऊपर से टीचर पर रोब झाड़े कि आपने ठीक से पढ़ाया ही नहीं। टीचर ने ठीक से पढ़ाया ना होता, तो उसी क्लास के किसी दूसरे स्टूडन्ट ने टॉप कैसे किया होता ? वैसे ही आध्यात्मिकता में हम अपने मन के नज़रिये को प्राथमिकता देकर गलियारों में घूमते रहे... गुणातीत संत द्वारा दिए गए मूल सिद्धांतों की ओर हमारी नज़र नहीं रखी।

जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, वैसे मन और संत दोनों रख कर हम कभी साधु की आंतरिक प्रसन्नता और प्रभु की मूर्ति का सुख नहीं पा सकेंगे।

तो अब 2004 साल का वर्ष जा रहा है। सत्संग में भी वर्षों गुजरते जा रहे हैं। 'भगवत् कृपा' भी अपने 25 वर्ष पूरे कर चुकी है। तो आइए, 2005 के नए वर्ष में प्रवेश होते हुए...

अब ना आए हमारे वर्तन से तुझ पर कोई आँच,
भक्तों से मिलजुल कर जिएं हम दो हज़ार पाँच।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 8.12.2004, बुधवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 15.12.2004, बुधवार – धनुर्मास प्रारंभ
(3) दि. 22.12.2004, बुधवार – एकादशी, व्रत
(4) दि. 7.1.2005, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
(5) दि. 14.1.2005, शुक्रवार – मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Tnad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,